ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

राम भक्ति और काव्य परम्परा एक चिन्तन

डा0 नम्रता जैन

एम0 एड0, पी0 एच0 डी0, तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
तीर्थंकर महावीर वि ववविद्यालय ,मुरादाबाद

आलोच्य विषय राम भक्ति काव्य का मूल स्रोत संस्कृत में रचित बाल्मीकि रामयाण को माना जाता है किन्तु राम भक्ति का वास्तविक प्रचार प्रसार गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस के द्वारा ही हुआ माना जाता है । रामानन्द की परम्परा मे उनके कुछ समकालीन सन्त जैसे सनत नामदेव और त्रिलोन महाराष्ट्र में रामचरित मानस का गान कर राम काव्य की महिमा का प्रचार प्रसार कर रहे थें। तो उत्तर मे तुलसी दास से पूर्व सूदन और बेनी कवि ने भी इस काव्य परम्परा को बढ़ाया था । हिन्दी में रामचरित्र को सर्वप्रथम उजागर करने वाले कवि भूपति माने जाते है उन्होने 12बीं शताब्दी के उत्तार्द्व में दोहा चौपाई शैली में रामकथा का सृजन किया था। इसके बाद भी लगातार राम काव्य लिखा जाता रहा होगा किन्तु उसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिल सका फिर 16 वीं शताब्दी के उत्तार्द्ध में राम काव्य के पर्याय गोस्वामी तुलसीदास का समय आया । उन्होने रामानन्द की लोक सत्ता का सच्चा संगठन किया और रामचरित मानस की रचना करके हिन्दी साहित्य और हिन्दू समाज में युगान्तर उपस्थित किया इसलिये जहाँ साहित्यिक दृष्टि से तुलसी हिन्दी के उत्कृष्ट महाकवि है वही हिन्दू समाज के उत्थापक एवं रक्षक भी है आज का हिन्दू धर्म तुलसी का हिन्दू धर्म है। राम भक्ति शाखा का पूर्ण परिपाक तुलसीदास के राम काव्य में हुआ है । तुलसी के बाद राम भक्ति काव्य थोड़ा बहुत विकसित हुआ किन्तु उसका नाम एवं प्रभाव तुलसी की लोकप्रियता के नीचे दब गया जिसका दूसरा कारण कृश्ण भक्ति परम्परा का उदय भी माना जाता है तुलसी के अतिरिक्त बौद्वों ने ईस्वी सन के कई शताब्दियों पूर्व राम को बौधिसत्व मान कर राम काव्य को अपने जातक साहित्य मे स्थान दिया। इस प्रकार ''दशरथ जातक'' ''अनामक जातकम'' तथा ''दशरथ कथानकम'' ये तीन जातक उत्पन्न हुऐ। इनका मूल स्रोत सम्भवतः रामकथा सम्बन्धी प्राचीन आख्यान काव्य है आगे चलकर बौद्वों मे रामकथा की लोकप्रियता घटने लगी अतः अर्वाचीन बौद्व साहित्य मे राम काव्य का अभाव नजर आता है।

बौद्वों की भातिं जैन मतावलम्बियों ने भी रामकथा को अपनाया और जैन साहित्य मे इसकी लोकप्रियता शताब्दियों तक बनी रही जिसके फलस्वरूप एक अत्यन्त विस्तृत जैन राम काव्य की सृष्टि हुई। विमल सूरी ने पहले पहल ईश्वी सन की तीसरी शताब्दी मे पउमचरिय (प्राकृत में) लिखकर रामकथा को जैन धर्म के साँचे मे ढ़ालने का प्रयत्न किया जिसका संस्कृत रूपान्तरण रविसेन ने सन 1660 ई मे किया था जो पदमचरित के नाम से प्रसिद्व है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी खड़ी बोली की यह गद्य रचना महत्वपूर्ण स्थान रखती है आगे चलकर और भी जैन कवियो ने रविसेन के आधार पर राम काव्य की रचना की । जिनमे प्रमुख है संस्कृत मे हेमचन्द्र कृत ''जैन रामायण (12वीं शताब्दी)'' जिनदास कृत राम पुराण (15

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

वीं शताब्दी) ''पदमदेव विजय गणी कृत रामचरित (16वीं शताब्दी) अपभ्रंश में सत्यभूदेव कृत पउनचरिय (8 वीं शताब्दी) में कन्नड भाशा में नागचन्द कृत पम्परामायण (11 वी शताब्दी) में तथा देवप्प कृत रामविजय चरित (16 वी शताब्दी) ।

राम काव्य में प्रायः सभी प्रकार की रचना शैली देखने को मिलती है । राम काव्य में ज्ञान कर्म और भक्ति की अलग अलग महत्व स्पष्ट करके भक्ति को सर्वश्रेष्ठ बताया है राम भक्त कवि जीवन का परम लक्ष्य भक्ति को मानते है इस जीवन से परे एक जीवन है उसका सुख इसी जीवन के कर्मो के द्वारा सम्भव है ।

तुलसी मानस के उत्तर काण्ड में कहते है –

बडे भाग मानुश तन पावा। सुर दुर्लभ सद ग्रन्थन्हि गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा । पाई न जेहिं परलोक सँवारा।।

इस जीवन मे सब प्रकार का साफल्य प्राप्त करने के लिये भक्ति ही सुलभ साधन है राम भक्ति को ही तुलसी सम्पूर्ण जीवन परिधि का केन्द्र बिन्दु मान कर चले है राम से उनकी वन यात्रा में ऋशि मुनि क्या माँगते है तुलसी इसका वर्णन मानस के अरण्यकांड मे कुछ इस तरह करते है।

जोगू जग्य जप तप जत कीन्हा। प्रभु कहुँ देई भगति वर लीन्हा।

राम काव्य में प्रायः मर्यादा की झलक मिलती है और तुलसी ने तो राम मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया है इसलिये समस्त विकारो से रहित राम चरित को संसार के सामने प्रस्तुत किया है मर्यादा के कारण ही श्रंगार और विशेषकर संयोग श्रृंगार का इसमें पूर्ण परिपाक नही दिखाई देता किन्तु यह बात तुलसी जैसे मर्यादाशील कवि के अतिरिक्त अन्य कवियों मे दिखाई नही देती । 18वी सदी मे राम काव्य में माधुर्य भावना का प्रभाव धीरे धीरे दिखाई देने लगा यह कृश्ण काव्य की माधुर्यमयी उपसाना का प्रभाव माना जा सकता है ।

इसलिऐ रामायण सखी सम्प्रदाय में ''अश्टयाम नखशिख'' इत्यादि के वर्णन मिलते। वैसे राम काव्य में नवरसों का प्रयोग है क्योंकि रामकथा इतनी व्यापक है कि उसमें सम्पूर्ण भावों का अपूर्व सहयोग हो जाता है। तुलसी के मानस में मानव जीवन की विविध परिस्थितियों एवं भावनाओ का बडा मार्मिक चित्रण है यह महाकाव्य है अतः इसमें स्वभावतः नवरसों का निरूपण मिलना आवश्यक है किन्तु दास्य भाव की भक्ति का आदर्श होने के कारण निर्वेद जन्य शांत रस ही इसका प्रधान रस है हास्य रस का राम काव्य में प्रायः आभाव ही दिखाई देता है।

राम कथा का मूल स्त्रोत संस्कृत मे रचित वाल्मीकि रामायण को माना जाता है। जनजन तक रामकथा पहुचाने का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास को जाता है वाल्मीकि तुलसी के अतिरिक्त

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

रामकथा की लोप्रियता बौद्व साहित्य मे और जैन साहित्य मे ही है । बौद्ध साहित्य में 3 जातकों में रामतकथा मिलती है तो वहीं जैन साहित्य में रामकथा को जैनाचार्यो ने जैन साहित्य के अनुकूल बना लिया है। ईसा की प्रथम सदी में विमल सूरी से रामकाव्य की परम्परा का प्रारम्भ होता है और 8वी शताब्दी में कवि स्वयंभू ने विमल सूरी की परम्परा मे अपभ्रश भाषा का प्रयोग कर रामकथा का जैन धर्म के लिये सृजन किया। इसके अतिरिक्त पुश्पदंत ने भी जैन साहित्य मे रामकथा का वर्णन किया है आगे चल कर राम साहित्य ब्रज भाषा मे जन जन तक पहुँचां जिनमे नामदेव त्रिलोचन, सूदन। मुन्नी लाल आदि रामानन्द के समकालीन कवि रहे और इसी परम्परा मे आगे गोस्वामी तुलसीदास ने राम साहित्य को जन साहित्य बना दिया।

समाज को संस्कार प्रदान करने के लिये माना जाता है वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के आधार पर समस्त राम काव्य का वर्णन हुआ किन्तु सही अर्थ मे राम काव्य का प्रचार प्रसार तुलसी कृत रामचरितमानस को कहा जाता है। वह उनके महत् प्रभाव के कारण परवर्ती राम काव्य मे दिखाई नही दी राम साहित्य मे गोस्वामी तुलसीदास का एकाधिपत्य दिखाई देता है। इसके द्वारा प्रतिपादित दास्य भक्ति राम काव्य के रूप मे इतनी लोकप्रिय हुई कि यह सब राममय हो गया । हांलाकि राम की माधुर्य भक्ति तुलसी के पूर्व भी विद्यमान थी तुलसी ने राम भक्ति को जो ऊँचाइयाँ दी है वह अन्य किसी राम साहित्य के द्वारा संम्भव नही थी । वस्तुतः धार्मिक ग्रन्थो की इस परम्परा में व्यक्ति की भावनाओं को अधिक महत्व दिया गया जिसके कारण काव्य शास्त्रीय गुण को अधिक महत्व नही दिया गया अपितु काव्य स्तर की उच्चता एवं काव्य सौश्ठव के विकास की दृष्टि से ही काव्य सृजन हुआ तुलसी जैसा महाकवि इस काव्य परम्परा से जुडा और अपने व्यापक समन्वयवादी दृष्टिकोण, महापुरूशों के आदर्श चरित्र एवं भक्ति के व्यापरक रूप की स्थापना करके एक और धर्म रक्षा लोक हित एवं समाज के उत्थान मे योगदान दिया है तो दुसरी ओर काव्य का उदात्त उत्कृश्ट एवं लोकमंगलकारी रूप प्रदान करने का स्तुत्य कार्य किया है। अतः यह कहा जा सकता है राम साहित्य का पर्याय तुलसीदास को माना जा सकता है जिन्होनें राम साहित्य के माध्यम से समाज की दशा और दिशा दोनो को बदल दिया ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

i. वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस गोरखपुर 1950
ii. गोस्वामी तुलसीदास – रामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर 1965
iii. वही, विनय पत्रिका
iv. वही, गीतावली

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

v. डॉ राजनाथ भार्मा – विनय पत्रिका (मूल आलोचना एवं टीका) विनोद आगरा, 1964
vi. आचार्य केशव – रामचन्द्रिका, गीता प्रेस, गोरखपुर 1974
vii. गोस्वामी तुलसीदास – पार्वती मुगल, गीता प्रेस गोरखपुर 1949
viii. गोस्वामी तुलसीदास – रामलला नहछु, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

www.ijahms.com